P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रतिरोध के कवि : राजकमल चौधरी

आलोक कुमार पाण्डेय
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा, बिहार, भारत

सारांश

समकालीन हिन्दी कवियों में अपनी अदमनीय प्रतिरोधक क्षमता और अदम्य साहस के लिए जाने जानेवाले राजकमल चौधरी ने कथ्य और प्रस्तुती के स्तर पर अपनी रचनात्मकता को जिस रूप में अभिव्यक्ति दी है, वह विवादास्पद होते हुए भी महत्त्वपूर्ण है। अकविता के प्रमुख कवि के रूप में उनके काव्य को उसकी शक्ति और सीमा के साथ जोड़कर देखा गया। आरंभिक दौर के मूल्यांकनकर्त्ताओं के निषेधात्मक वृत्ति के कारण राजकमल चौधरी के प्रतिरोधात्मक संघर्ष को अनदेखा किया जाता रहा। आज अकविता के साथ ही राजकमल चौधरी की हिंदी कविता पर नये सिरे से विचार करना जरूरी हो गया है। यह काम होने भी लगा है।

मुख्य शब्द : अकविता, आत्मपरकता, आभिजात्यवर्गीय सौन्दर्याभिरूचि, औघड़पन, एंट्री–पोएट्री, कवित्वहीनता, काव्यांतरण, नॉन–पोएट्री, परंपरा–विच्छेद, प्रतिरोधात्मक संघर्ष, बहुआयामी, रचनात्मकता, वस्तुपरकता, समकालीनता।

प्रस्तावना

समकालीन कवियों में राजकमल चौधरी को मुक्तिबोध और धूमिल के मध्यवर्ती कवि माना जाता है। चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964), मुक्तिप्रसंग (1966) एवं संसद से सड़क तक (1972) के प्रकाशन के साथ ही समकालीनता का यह दौर पूरा हो जाता है जिसे नवीन मूल्य–संक्रान्ति का दौर माना जाता है। यह नयी कविता के बाद का दौर था, जिसे नवीन मूल्यबोध से चैतन्यता प्राप्त हुई थी। समकालीनता की इसी चेतना का विकास नवीन जनवादी चेतना के रूप में संभव हुआ। प्रस्तावित शोध का मुख्य विषय राजकमल चौधरी की बहुआयामी हिंदी कविता की मूल्यवत्ता पर विचार करना है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजकमल चौधरी की हिंदी कविता को अकविता, बीट पीढ़ी एवं भूखी पीढ़ी की कविता तक सीमित मान लेने के कारण उसकी बहुआयामिता अलक्षित रह गयी है। इससे उसकी कविता का मूल्यांकन भी दुष्प्रभावित हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उनकी कविता के अलक्षित रूप को सामने लाना है, ताकि उसके मूल्यांकन पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को दूर किया जा सके।

परिकल्पना

समकालीन कविता का युग–जीवन को प्रभावित करने वाले विषयों से गहरा संबंध रहा है। इसके अंतर्गत राजनीति, समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था जैसे विषय को प्रमुख स्थान मिला है। खासकर राजनीति के पक्ष की प्रमुखता के कारण इस कविता को राजनीतिक कविता के रूप में खास पहचान मिली है। राजनीति को छोड़कर समकालीन कविता का रचा जाना संभव भी नहीं रहा है। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि समकालीन जनजीवन को राजनीति ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। राजनीति के साथ अर्थ–व्यवस्था का गहरा जुड़ाव होता है। अर्थ–व्यवस्था की धूरी पर राजनीति का चक्र घूमता रहता है। इसके साथ ही राजनीति भी उसे प्रभावित करती रहती है। इन दोनों कारकों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं से गहरा संबंध होता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी परिकल्पना पर आधारित है।

शोध–विधि

प्रस्तावित शोधालेख के लिए आसन–कार्य–विधि अपनायी जाएगी। उपर्युक्त विषय के अनुशीलन में अंतरानुशासनिक विधि एवं शोधपरक वस्तुनिष्ठ विधि को अपनाया जाएगी। आवश्यकतानुसार पर शोध की अन्य विधियों का उपयोग किया जा सकता है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध के साधनों में मुख्य रूप से राजकमल चौधरी की रचनावली को आधारभूत सामग्री के रूप में उपयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त

समकालीन हिंदी कविता से जुड़ी समीक्षात्मक कृतियों का सहारा लिया जाएगा। अन्य सामग्रियों के रूप में पत्र–पत्रिकाओं एवं विभिन्न कोशों से भी सामग्रियों का सृजनात्मक विनियोग किया जा सकता है।

साहित्यावलोकन

संबंधित साहित्य के अवलोकन से कवि पर केंद्रित शोध–कार्य 'स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य और राजकमल चौधरी का काव्य–संसार' (प्रियंका कुमारी, 2017) तथा आलेख–शोधालेख के अंतर्गत 'जनता का आदमी : राजकमल चौधरी के बहाने'(प्रकाश, 2013),'हिन्दी दिवसः सौ बरस की 10 श्रेष्ठ कविताएं' (मंगलेश डबराल, 2013), 'राजकमल चौधरी के साहित्य में समाज के सच' (देवशंकर नवीन, 2009),' राजकमल चौधरी की कविताओं में राजनीतिक चेतना' (गजेन्द्र कुमार मीणा, 2009), समकालीन काव्य–यात्रा और राजकमल चौधरी का अध्ययन (नन्दकिशोर नवल, 2004), तथा मौलिक पुस्तक के रूप में प्रकाशित 'राजकमल चौधरी : जीवन और सृजन' (देवशंकर नवीन, 2012) द्वारा अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने विशेषांक (लहर, राजकमल चौधरी मूल्यांकन अंक, दिसम्बर–जनवरी 1968) भी निकाले गए हैं। परन्तु प्रस्तावित विषय पर अबतक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है न इससे संबद्ध विषय पर कोई गहन अध्ययन सामने आया है, अत एव यह विषय शोधा लेख हेतु सर्वथा उपयुक्त है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

राजकमल चौधरी की कविता में सामाजिक जागरूकता और प्रतिरोध की साहसिकता मौजूद है।उनका प्रतिरोध सर्वत्र सकारात्मक है। वहाँ प्रतिरोध के लिए प्रतिरोध देखने को नहीं मिलता है। हिंदी कवि राजकमल चौधरी की कविता को केवल अकविता, बीट पीढ़ी की कविता और भूखी पीढ़ी की कविता तक सीमित मान लेने के कारण उसके सम्यक् मूल्यांकन में जो बाधा उत्पन्न हुई है, उसे हिंदी की समकालीन कविता के सम्यक् बोध एवं मूल्यांकन के लिए उसे दूर करना अपरिहार्य हो गया है। जिस प्रकार मुक्तिबोध को केवल प्रयोगवाद एवं नयी कविता तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता है, उसी प्रकार राजकमल चौधरी की स्थिति बनती है। हिंदी आलोचना की यह सीमा रही है कि अपनी सुविधा के लिए एक बार तो तय कर लिया जाता है, उसी को निरंतर चलाया जाता है। ऐसी स्थिति में बहुआयामी साहित्यकारों की साहित्यिक चेतना के उद्घाटन में बाधा पड़ती रही है। राजकमल चौधरी के साथ ऐसा ही कुछ घटित हुआ है, फलतः उनकी बहुआयामी चेतना की पहचान धूमिल होती रही है। अकविता आंदोलन से जुड़ने का फल यह हुआ कि उनकी काव्यात्मक चेतना के विकास का वहीं तक अंत मान लिया गया। यह सच नहीं है। उनके काव्यांतरण को देखा जाना चाहिए।

राजकमल चौधरी नयी कविता से आगे की यात्रा के लिए जिस राह की ओर चल पड़े वह अकविता थी। पर यह उनकी अंतिम मंजिल नहीं थी। उनकी कविता में बहुत चीजें ऐसी हैं जो उन्हें सकारात्मक एवं व्यापक सोच का कवि सिद्ध करती हैं। मुक्तिबोध के बाद और धूमिल से पहले जिस कवि ने हिंदी कविता को व्यापक रूप से समृद्ध किया, उसे राजकमल चौधरी के रूप में पहचाना जा सकता है। इस संदर्भ में कई मान्यता प्राप्त विद्वानों ने इशारा भी किया है, लेकिन इन इशारों को अनुचित ढंग से नजरअंदाज किया जाता रहा है।

अकविता पर विचार करते हुए प्रसिद्ध आलोचक रेवती रमण ने लिखा है, ''अकविता एंट्री पोएट्री नहीं है। इसे नॉन–पोएट्री का पर्याय कहना भी सही नहीं है। इसका एक निश्चित 'ऐतिहासिक' (संदर्भ है और वैश्विक सरोकार हैं।''[1]

अकविता को एंटी पोएट्री और नॉन पोएट्री न मानने का कारण यह है कि उक्त कविता को एकमात्र निषेधात्मक वृत्ति की अभिव्यक्ति न माना जाए, साथ ही इसे कवित्वहीनता का भी स्थानापन्न न माना जाए। सच तो यह है कि अकविता का अपना ऐतिहासिक और वैश्विक संदर्भ रहा है। यहाँ निषेध का अर्थ मूल्यहीनता से है जबकि कवित्वहीनता अर्थ सौन्दर्यहीनता से। अकविता के परिक्षण के क्रम में उससे जुड़े कवि राजकमल चौधरी के काव्य पर विचार करना भी अपेक्षित है।

अकविता समकालीन कविता का महत्त्वपूर्ण और सार्थक काव्यात्मक चरण रहा है। नयी कविता से संबंध–विच्छेद को प्रकट करने के लिए ही इसे अकविता कहा गया। यह नामकरण परंपरा–विच्छेद का भी द्योतक है।

मुक्तिबोध ने नयी कविता के अंतर्विरोधों और आत्मसंघर्षों की चर्चा करते हुए हिंदी कविता की नवीन दिशा में बढ़ने की संभावना का संकेत देने के साथ ही उसकी नींव भी रख दी थी। यह ऐतिहासिक परिस्थिति की अनुपेक्षणीय मांग थी। इस संदर्भ में प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने मुक्तिबोध के 'समीक्षा की समस्याएँ' तथा केदारनाथ सिंह के 'सन् साठ के बाद की हिंदी कविता' जैसे ऐतिहासिक महत्त्व रखने वाले निबंधों का उल्लेख किया है। यह नेहरू युग के प्रभामंडल की समाप्ति का युग था। युगीन साहित्यिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए केदारनाथ सिंह का कथन है, ''संभवतः नव–लेखन के क्षेत्र में यह सौन्दर्यवादी रूझान कुछ दिनों तक और चलता रहता, यदि अकस्मात् सन् 1962 के राष्ट्रीय संकट ने साहित्य तथा राजनीति में एक साथ बहुत–से मोहक आदर्शों और खोखले काव्यात्मक शब्दों के प्रति हमारे मन में एक विराट् शंका न भर दी होती।''[2]

केदारनाथ सिंह के उक्त कथन में साहित्यिक क्षेत्र में प्रचलित जिस सौन्दर्यवादी रूझान की चर्चा की गई है अकविता ने इसी रूझान का निषेध किया है। यह नयी सृजनधर्मिता का द्योतक था जिसे अकविता की आत्यंतिक विशेषता मान ली गयी। केदारनाथ सिंह ने इस स्थिति को बिलकुल स्पष्ट कर दिया है। उन्होंने आगे लिखा है, ''कुछ आधुनिक विचारकों और विशेष रूप से नई पीढ़ी के रचनाकारों के भीतर नवलेखन के इस सौन्दर्यवादी रूझान के विरूद्ध एक सीधी प्रतिक्रिया हुई। सृजनात्मक विद्रोह के वे तत्त्व जो अज्ञेय आदि की कृतियों से गायब हो गए थे, इन रचनाकारों की कृतियों में उभरकर आने लगे। इस अंतर के साथ की इनके विद्रोह

के पीछे काम करनेवाला मानसिक विक्षोभ 'साहित्यिक' कम और ऐतिहासिक अधिक है।''[3]

राजकमल चौधरी की कविता इसी ऐतिहासिक परिस्थिति की उपज है। डॉ. रेवती रमण जी ने अकविता के व्यवस्था विरोध को निश्छल माना है। यही तथ्य है जो राजकमल चौधरी की कविता पर भी चरितार्थ होता है। यही उसकी कविता की कथ्यात्मकता का विशिष्ट पहलू है। इसके साथ ही उन्होंने कविता के अभिव्यक्ति–पक्ष को भी नया आयाम दिया है। इसके पहले एक खास प्रकार की सौन्दर्याभिरूचि को ही प्रश्रय दिया जा रहा था। एक खास प्रकार के वर्गीय चरित्र वाले आभिजात्य वर्गीय सौन्दर्याभिरूचि का रचनात्मक और सैद्धान्तिक विरोध करते हुए मुक्तिबोध ने नयी कविता से विद्रोह करने वाले अकविता से जुड़े राजकमल चौधरी जैसे कवियों का मार्ग प्रशस्त किया।

राजकमल चौधरी की कविता पर तत्कालीन देश काल के प्रभाव के साथ ही विश्व स्तर पर युवाओं के मानसिक परिवर्तन का भी प्रभाव पड़ा है। विश्व स्तर पर व्याप्त अलगाव को निम्नांकित पंक्तियों में देखा जा सकता है :

''सात हजार वर्षों में एक आदमी ने बना
ए हैं साढ़े तीन सौ करोड़ परि
वार। परिवारों की रक्षा के लिए मकान। मकानों
की रक्षा के लिए दीवारें। सात हजार
बरसों में एक आदमी ने बनाई हैं साढ़े
तीन सौ करोड़ दीवारें।''[4]

xxx

''नहीं यह तस्वीर अधूरी है।
नही, गलत है यह पूरी तस्वीर
कैदखाना नहीं बन सकती है,
यह टूटी हुई जंजीर
खिड़कियों के अन्दर सजी हुई कब्रे लगातार
और, हर घर के सामने बनी हुई
दीवार ही दीवार
और, फुटपाथों पर खड़े हुए प्रेम
और हर दरवाजे पर इन्तजार करते हुए
ताबूतों की कतार
और, टूटे हुए सलीबों के टुकड़े...
गलत है यह पूरी तस्वीर''[5]

इन युवाओं की मानसिक प्रतिक्रिया में उनका आक्रोश, विद्रोह और प्रतिरोध के भाव सम्मिलित हैं। तत्कालीन आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थिति से उन युवा कवियों का काव्य अछूता नहीं रह सका। स्वाभाविक है कि उनकी प्रतिक्रिया में आवेश के साथ उनकी बौद्धिकता भी मिली हुई थी। यही कारण है कि अकविता और इस प्रकार के अन्य काव्यांदोलनों में अराजकता के साथ ही आभिजात्यवादी सौन्दर्याभिरूचि के प्रति विरोध का भाव भी मौजूद रहा है। राजकमल चौधरी के काव्य में उनके जीवन–मूल्य और काव्य–मूल्य संबंधी दृष्टिकोण की उपेक्षा की जाती रही है। फलतः उसका मूल्यांकन बाधित हुआ है।

भारत एवं विश्व की युवा पीढ़ी में युगानुकूल दृष्टि–परिवर्तन की जो नवीन प्रवृत्ति उभरी उसमें व्यवस्था–परिवर्तन के साथ ही जड़ीभूत सौन्दर्याभिरूचि के प्रति परिवर्तन की आकांक्षा भी परिलक्षित होती है। राजकमल चौधरी की कविता में ये दोनों अभिलक्षण मौजूद हैं :

''पूरी मनुष्यता को बाँटकर, विलगाकर,
कुचलकर, वरगलाकर, हाँककर, लड़ाकर–
मनमाने कानून और प्रचलन का कैदी बनाकर
राजभेगती प्रभुसत्ता के इशारों पर बढ़ता इतिहास;
स्वार्थ–जाल के धर्म, जातीयता,
संस्कृति–सभ्यता का विकास''[6]

xxx

''अनियामक जनता की दुनिया, इसे तोड़ो–
जो शोषित रहकर भी
शास्ता और शासक के अटूट सम्बन्ध की
मूलभूत चक्राकार अवस्थिति को
चाहे–अनचाहे, जाने–अनजाने
पोषती और पालती है।''[7]

xxx

''अधजली लाशें नोचकर
खाते रहना श्रेयस्कर है
जीवित पड़ोसियों को खा जाने से
हम लोगों को अब शामिल नहीं रहना है
इस धरती से आदमी को हमेशा के लिए खत्म
कर देने की
साजिश में''[8]

xxx

'''अज्ञेय' के साँप–
रहते हैं शहर में
गजल लिखते हैं, अब भी दरबारी
बहर में!''[9]

व्यवस्था–विरोध और जड़ीभूत सौन्दर्याभिरूचि के प्रति विरोध–भाव उनकी कविता की खास विशेषताएँ हैं। उनकी कविता में केवल अश्लीलता और अराजकता के तत्त्व की पड़ताल करना उचित नहीं है। उनकी कविता के प्रति न्याय करने के लिए इन चीजों के पीछे छिपे उद्देश्यों को देखना–परखना भी जरूरी है। राजकमल चौधरी के व्यवस्था–विरोध का मुख्य कारण यह है कि वर्तमान व्यवस्था ने सामान्य नागरिक को तबाह किया है तथा जड़ी भूत सौन्दर्याभिरूचि का विरोध इसलिए कि इसने साहित्यिक अभिरूचि को जकड़ कर नवीन रूचि के विकास में बाधा उत्पन्न की है।

किसी भी बड़े परिवर्तन के लिए जोरदार एवं कठोर प्रयास की आवश्यकता होती है, बल्कि इसके लिए अभियान चलाने की आवश्यकता होती है। राजकमल चौधरी की हिंदी कविता एक अभियान का प्रतिफल है, जिसमें जड़ता की जगह गतिशीलता मौजूद है और अनुशासन के स्थान पर अराजकता। उनकी कविता अवागार्द की तरह आगे बढ़ती है और अपने आगे आने वाले सभी अवरोधों का प्रतिरोध करती है। ऐसी स्थिति में कविता जैसी बन सकती थी, उसी प्रकार की बनी है। यह समय के दबाव में निर्मित कविता है।

अकविता अपने समय की उपज है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध आलोचक रेवती रमण का कथन द्रष्टव्य है,

''अकविता को नयी कविता का उत्तर पक्ष मान सकते हैं। सत्तर के दशक के सामाजिक–राजनीतिक अंतर्विरोधों से मुठभेड़ की यह प्रवृत्ति संरचना और कथ्य में अराजक प्रतीत होती है, क्योंकि व्यक्ति के पास विकल्प नहीं होता है। उसके पास चरम निराशा का परिदृश्य होता है।''[10]

मुक्तिबोध ने अपने समय के अंतर्विरोधों को पहचान कर आगे बढ़े थे। राजकमल ने भी अपने लिए यहीं मार्ग चुना था। उनकी प्रतिनिधि कविता तद्युगीन अंतर्विरोधों को सामने लाने वाली प्रतिनिधि कविता है। इसे केवल कवि की व्यक्तिगत पीड़ा की अभिव्यक्ति मानना उचित नहीं है। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नंद किशोर नवल की मान्यता है, ''राजकमल की मूल प्रेरणा स्वतंत्रता थी। स्वाभावतः वे बीट और भूखी दोनों पीढ़ियों के कवियों से सबसे ज्यादा प्रभावित थे। लेकिन इस प्रभाव के भीतर से उन्होंने अपने लिए एक रास्ता निकाल लिया और 'मुक्तिप्रसंग' जैसी लंबी कविता की सृष्टि की, जिसकी आत्मपरकता में गजब की वस्तुपरकता है।''[11]

मुक्तिप्रसंग के सामाजिक एवं सकारात्मक पक्ष को उद्घाटित करते हुए ए. अरविन्दाक्षन ने लिखा है, ''राजकमल की लंबी कविता 'मुक्तिप्रसंग' मात्र निजी जीवन की दारूणता की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि वह समकालीन अंतर्विरोधों का हलफनामा भी है। समय को दूषित करके मानवीय अनुभवों की सार्थक बहुलताओं को गुम करने की प्रवृत्ति का विरोध राजकमल अपने औघड़पन से दर्शा रहे हैं।''[12]

यह सच है कि अकविता में कुरूचिपूर्ण यौन बिम्बों की प्रचुरता है, लेकिन इसके कारण भी रहे हैं। युग धर्म से कोई कवि बच नहीं सकता है, इसी प्रकार कुछ अपरिहार्य बुराइयों से भी बच पाना कठिन होता है। अकविता और राजकमल चौधरी –दोनों इन सब चीजों के शिकार हुए हैं। नाराज पीढ़ियों का गहरा प्रभाव भारतीय युवा कवियों पर भी पड़ा। बीट पीढ़ी, ऐंग्री यंगमैन के साथ ही बंगाल की भूखी पीढ़ी से अतिशय प्रभावित होने के कारण अकविता दुष्प्रभावित हुई है। लेकिन उसने इन सबसे बहुत कुछ सीखा भी है। राजकमल चौधरी के साथ भी यही सबकुछ हुआ है। रेवती रमण के अनुसार,''एलेन गिंसबर्ग ने भूखी–नंगी–युयुत्सु पीढ़ी को अनास्था और आत्म रति के वृत से बाहर निकाल कर आक्रामक और दुःसाहसी बनाया।''[13]

राजकमल चौधरी जैसे कवियों की कविताओं में कथ्य और अभिव्यक्ति पक्ष का विशिष्ट भंगिमाओं को सकारण मानते हुए डॉ. नामवर सिंह ने टिप्पणी की है, ''सारे युवा लेखन को 'देह की राजनीति' का पर्याय कहने के पीछे और राजनीति हो सकती है। स्वयं राजकमल चौधरी को ऐसे आरोप का निशाना बनना पड़ा है। .....जिस नंगे और बेलौसपन के साथ यहाँ एक सच बात कही गई है वह भी कुछ लोगों को 'नंगई' मालूम हो सकती है, लेकिन सच कहने के लिए अनेक युवा लेखकों ने ऐसी नंगई को जान–बूझकर अपनाया है, क्योंकि बड़े–बड़े पहाड़ों को तोड़ने के लिए ऐसे शब्द 'डाइनामाइट' अथवा विस्फोटक का कार्य करते हैं और रचना में मितव्ययिता की दृष्टि से उनका उपयोग आवश्यक है।''[14]

ए. अरविन्दाक्षन ने 'मुक्तिप्रसंग' की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करते हुए टिप्पणी की है, ''वस्तुतः यह हमारे कालखंड की साजिश है जो आदमियत को हमेशा के लिए नष्ट करने पर तुली हुई है जिसकी तरफ राजकमल चौधरी का अर्थवान इशारा है।''[15]

निष्कर्ष

राजकमल चौधरी अकविता के समर्थ कवि हैं। उनकी कविता में अकविता के गुण–दोष मौजूद हैं। इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि केवल दोष–दर्शन के आधार पर किसी प्रकार का संतुलित मूल्यांकन करना संभव नहीं है। शक्ति और सीमा हर जगह मौजूद रहती है, हर चीज में मौजूद रहती है। राजकमल चौधरी की कविता और अकविता भी अपवाद नहीं है। जहाँ तक राजकमल चौधरी की कविता की शक्ति का प्रश्न है वह उसकी प्रतिरोधात्मक शक्ति है।

सुझाव

राजकमल चौधरी की कविता पर ठीक से विचार करने का समय आ गया है। उपेक्षा और आरोप का दौर समाप्त हो चुका है। वर्तमान समय की मांग है कि समकालीन परिदृश्य को देखते हुए राजकमल चौधरी की कविता पर पुनर्विचार किया जाए। उनकी कविता के साथ न्याय करने के लिए यह जरूरी हो गया है।

अंत टिप्पणी

1. *हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, खण्ड : 1, प्र. सं. शंभुनाथ, भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता, प्रथम संस्करण : 2019, पृ.सं.–132,*
2. *कविता के नए प्रतिमान : डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1995, पृ.सं.–93,*
3. *वहीं, पृ.सं.–93,*
4. *राजकमल चौधरी रचनावली : सं. देवशंकर नवीन, खण्ड–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2015, पृ.सं.–220,*
5. *राजकमल चौधरी रचनावली : सं. देवशंकर नवीन, खण्ड–1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2015, पृ.सं.–504,*
6. *राजकमल चौधरी रचनावली : सं. देवशंकर नवीन, खण्ड–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2015, पृ.सं.–231,*
7. *वहीं, पृ.सं.–233,*
8. *वहीं, पृ.सं.–260,*
9. *हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, खण्ड : 1, प्र. सं. शंभुनाथ, भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता, प्रथम संस्करण : 2019, पृ.सं.–336,*
10. *वहीं, पृ.सं.–133,*
11. *रचना का पक्ष : डॉ. नंदकिशोर नवल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2000, पृ.सं.–168,*
12. *समकालीन हिन्दी कविता : ए. अरविन्दाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2010, पृ.सं.–63,*
13. *हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, खण्ड : 1, प्र. सं. शंभुनाथ, भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता, प्रथम संस्करण : 2019, पृ.सं.–133,*
14. *वाद विवाद संवाद : डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2011, पृ.सं–125,*
15. *समकालीन हिन्दी कविता : ए. अरविन्दाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2010, पृ.सं.–63.*